Report of the Minor Research Project
Submitted to
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

THE CRITICAL PERSPECTIVE OF CONTEMPORARY POETS : WITH SPECIAL REFERENCE TO KEDARNATH SINGH, ARUN KAMAL AND RAJESH JOSHI

लघु शोध परियोजना

समकालीन कवियों की आलोचना दृष्टि : केदारनाथ सिंह, अरुण कमल और राजेश जोशी के विशेष संदर्भ में

Submitted by

Dr. USHA NAIR
Associate Professor
Dept. of Hindi
St. Teresa's College
Ernakulam

शोधकर्ता

डॉ. उषा नायर
एसोसियेट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सेंट तेरेसास कालेज
एरणाकुलम

2015

समकालीन कवियों की आलोचना दृष्टि : केदारनाथ सिंह, अरुण कमल और राजेश जोशी के विशेष संदर्भ में

लघु शोध परियोजना :

उद्देश्य - 1) समकालीन कवियों की आलोचनात्मक संवेदना का अध्ययन

2) समकालीन कवियों की सामाजिक प्रतिबद्धता का आकलन

अध्ययन की रूप रेखा - हिन्दी आलोचना की विकास यात्रा बहुत ही स्पष्ट और सुनिर्दिष्ट रही है। आलोचना के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में कवि-आलोचकों के लेखन के मूल्यांकन का प्रयास यहाँ किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिये चार अध्याय निर्धारित किये गये हैं जिनमें प्रथम अध्याय में कवि-आलोचकों की परंपरा और विरासत पर विचार किया गया है। अगले तीन अध्याय क्रमशः केदारनाथ सिंह, अरुण कमल और राजेश जोशी पर केंद्रित हैं। इस लघु शोध परियोजना में उपर्युक्त रचनाकारों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के निष्कर्ष अंत में संकलित है।

निष्कर्ष

समकालीन कविता, आलोचना और रचनाशीलता पर विचार करने के लिये उन तीन घटनाओं का उल्लेख आवश्यक हो जाता है जिन्होंने स्वातंत्र्योत्तर काल में हमारी सोच को काफी हद तक रूपान्वित किया है। आपातकाल, सोवियत संघ का पतन तथा संस्कृति का प्रौद्योगिकी द्वारा विस्थापन। आपात काल भारतीय जनतंत्र के चरम संकट का संकेत चिह्न था तो सोवियत पतन वैश्विक स्तर पर जनतांत्रिक स्वप्नों का सर्वनाश। एक ध्रुवीय विश्व की निर्मिति, भूमंडलीकरण, फासीवाद, मुक्तबाज़ारवाद, ज्ञान का सूचना द्वारा विस्थापन, मुक्त बाज़ारवाद, ज्ञान का सूचना द्वारा विस्थापन, जनतंत्र और न्याय का कमज़ोर पडना, वास्तविक दुनिया से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण एक सारवर दुनिया हिंसक मीडिया बिम्बों आदि की ओर समय ने करवट ली है। संकट का यह समय साहित्यकार से सजग इतिहास दृष्टि और वैचारिक हस्तक्षेप की माँग करता है। आज के युग में प्रतिरोध के नये तरीकों की खोज में ही रचनाकार की सार्थकता है।

केदारनाथ सिंह की कविता और आलोचना दोनों ही सामाजिक और साहित्यिक प्रतिबद्धता के प्रमाण है जो उपभोक्ता समाज में लिखी जाने वाली कविता की ताकत और सीमा, दोनों को समझते हैं। वे मानते हैं कि मानव विरोधी शक्तियों के बीच कविता को मानव संबन्ध बनाये रखना ही कवि का प्राथमिक कर्तव्य है। वे कविता के लिये विचार को महत्वपूर्ण मानते हैं किंतु विचारधारा को बंदिश उन्हें स्वीकार्य नहीं है। वे उन कवियों में प्रमुख हैं जिनकी आलोचना दृष्टि कविता को कविता बनाये रखने के लिये कला और जीवन के अन्तसंबन्धों के बारे में लगातार जद्दोजहद करती रहती है।

कवि-आलोचक अरुण कमल के संबन्ध में राजेश जोशी लिखते हैं - अरुण कमल की आँखों में नींद नहीं है। अपलक जागती कविता अपने आसपास और दूर दराज घट रहे बहुत कुछ को देखने की कोशिश करती है और अधिक को, सब कुछ को देखने की इच्छा रखती है। उनकी कविता और उनका गद्य दोनों ही में मानव के प्रति स्पष्ट पक्षधरता है।

इसी पक्षधरता के साथ राजेश जोशी भी लिखते हैं। वे अपनी और अपनी पीढी की रचनात्मक समस्याओं को ध्यान में रखकर आधुनिक हिन्दी काव्य परंपरा का मूल्यांकन किये। उनकी टिप्पणियों की रचनात्मकता केवल भाषिक रचाव में नहीं बल्कि उनकी दृष्टि में है। वे साहित्य के प्रश्नों को समाज, राजनीति और मनुष्य के ठोस संदर्भों में देखते हैं।

डॉ. नामवरसिंह ने अपने लेखकीय जीवन की शुरुआत कवि के रूप में की थी। उन्होंने स्वीकार किया है कि वे सरस्वती के मंदिर में कविता के पुष्प चढाने आये थे किन्तु भीतर प्रवेश करने पर इतना कूडा दिखाई दिया कि झाडू लेकर सफाई में लग गये और आज तक इसी कार्य में लगे हैं। संभवतः आलोचना के क्षेत्र में एकनिष्ठता के कारण वे बुलन्दियों को छू सके किंतु कवि कहीं पीछे रह गया।

हमारे चर्चित कवियों में तीनों ही मूलतः कवि है। वे आलोचक बनने के लिये आलोचना नहीं लिखते, किंतु निष्ठावान आलोचक होते हुये भी उन्होंने अपने भीतर के कवि की उपेक्षा नहीं की। गद्य की संप्रेषणीयता कविता से अधिक होती है और इन कवियों का आलोचना की ओर मुडना वस्तुतः क्षतिपूर्ति है। उनकी रचनाशीलता आलोचना को समृद्ध बनाती है। इन कवियों ने स्वीकार भी किया है कि उन्हें इस क्षेत्र में खींच लाने वाली भावना है - आलोचक के प्रति रचनाकार का अविशवास! विमोचन की संस्कृति, पुरस्कार के प्रपंच और प्रकाशन के बाहुल्य के बीच आलोचना की विश्वसनीयता कम हुई है। कवियों की आलोचना की सबसे बडी उपलब्धि है रचना की अचूक और सटीक पहचान। बडे-बडे आलोचकों के पूर्वग्रहों को काट छाँटकर रचना को उसकी सही जगह पर प्रतिष्ठित करने महत्वपूर्ण कार्य समय-समय पर कवि आलोचकों के हाथों संपन्न हुआ है।

---

1. एक कवि की नोटबुक - राजेश जोशी - पृ. 207

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरुण कमल की काव्य संवेदना (जवाहर पुस्तकालय, 2012)
2. आलोचक और आलोचना - कमला प्रसाद (आधार प्रकाशन, 2002)
3. आधुनिक हिन्दी समालोचना का विकास - डॉ. वेंकट शर्मा (आत्माराम एंड संस, 1962)
4. आलोचना और समकालीन रचना - रामस्वरूप द्विवेदी (प्रतिभा प्रकाशन, 1988)
5. एक कवि की नोटबुक - राजेश जोशी (राजकमल प्रकाशन, 2004)
6. एक कवि की दूसरी नोटबुक - राजेश जोशी (राजकमल प्रकाशन, 2009)
7. कवि ने कहा - केदारनाथ सिंह (राधाकृष्ण प्रकाशन, 2014)
8. कल्पना और छायावाद - केदारनाथ सिंह (राधाकृष्ण प्रकाशन, 2012)
9. कविता और समय - अरुण कमल (राजकमल प्रकाशन, 1999)
10. कवि ने कहा - अरुण कमल (वाणी प्रकाशन, 2012)
11. केदारनाथ सिंह की कविता - गोविन्द प्रसाद (स्वराज प्रकाशन, 2013)
12. गोलमेज आलोचनात्मक निबंध - अरुण कमल (वाणी प्रकाशन, 2009
13. ज़मीन पक रही है - केदारनाथ सिंह (राधाकृष्ण प्रकाशन, 2014)
14. नामवर के विमर्श - सुधीश पचौरी (पत्रवीणा प्रकाशन, 1995)
15. निराला की साहित्य साधना - रामविलास शर्मा (राजकमल, 1992)
16. हिन्दी आलोचना का विकास - मधुरेश (सुमति प्रकाशन, 2004)

17. शिनाख्त - मधुरेश (शिल्पायन, 2013)
18. राजेश जोशी - स्वप्न और प्रतिरोध - नीरज (स्वराज प्रकाशन, 2013)
19. हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी - निर्मला जैन (राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000)
20. भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा - मैनेजर पांडे (वाणी प्रकाशन, 2014)
21. वर्तमान साहित्य - शताब्दी आलोचना पर एकाग्र (समीक्षा प्रकाशन, 2002)
22. हिन्दी कविता : आधुनिक और समकालीन (डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, 2000)
23. समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श (प्रोफ. श्रीराम शर्मा, 2000)
24. मुक्तिबोध रचनावली - गजानन माधव मुक्तिबोध (राधाकृष्ण प्रकाशन)
25. समकालीन हिन्दी आलोचना - परमानन्द श्रीवास्तव (साहित्य अकादमी, 1991)
26. कब्रिस्तान में पंचायत - केदारनाथ सिंह (राधाकृष्ण प्रकाशन, 2010)
27. मैं वो शंख महाशंख - अरुण कमल (वाणी प्रकाशन, 2012)
28. Literary Criticism - A Short History - J.R. Virsatt (I.B.H. Publishing House, 1970)
29. Indian Literary - July-Dec. 1992